हरे चारे के लिए बाजरा की खेती

कृषि कुंभ (जुन, 2023),
खण्ड 03 भाग 01, पृष्ठ संख्या 27–28

हरे चारे के लिए बाजरा की खेती

विशाल कुमार मिश्रा[1], विभा यादव[1], राज कुमार[1], अखिलेश कुमार गुप्ता[2] एवं कुलदीप कुमार[1]
सहायक प्रोफेसर[1], शोधार्थी छात्र[2],
आईआईएमटी विश्वविद्यालय मेरठ, उ०प्र०, भारत।
Email Id: yvibha3@gmail.com

बाजरा शीघ्रता से बढने तथा कम अवधि में चारा पैदा करने वाली एक आदर्श फसल है। अधिक कल्ले फूटने, सूखा एवं गर्मी बर्दाश्त करने की क्षमता, विविध मृदा–जलवायुविक परिस्थितियों में उत्तम बढ़वार, चारे में प्रोटीन एवं रेशे की बहुलता जैसे गुणों के कारण पशुधन के लिए श्रेष्ठ चारा फसल है। फसल में पुष्पन की अवस्था में बाजरा के हरे चारे में 10–15% प्रोटीन, 50–60% चारे की पाचनशीलता, 96.6% राख, 2.24% ईथर निष्कर्ष के अलावा 0. 39% फॉस्फोरस पाया जाता है। बीज की अवस्था में कटाई करने पर चारे में पोषक तत्वों की मात्रा में गिरावट आ जाती है।

बाजरा के चारे में हाईड्रोसायनिक अम्ल (विषाक्त पदार्थ) की मात्रा बिल्कुल नहीं होती है। बाजरे को अकेले अथवा लोबिया के साथ सहफसल के रूप में बोया जा सकता है।

उपयुक्त जलवायु

बाजरा मुख्यतः खरीफ में खाद्यान्न फसल के रूप में उगाई जाती है. ग्रीष्मकाल में चारे के लिए यह उत्तम फसल है। बाजरे की उचित बढ़वार के लिए 30–35 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा रहता है।

भूमि का चुनाव–

बाजरे की उत्तम फसल बढ़वार के लिए उचित जलनिकास वाली बलुई दोमट अथवा हल्की भूमि उपयुक्त रहती है।

खेत की तैयारी

खेत में हल्की सिंचाई करके 2–3 जुताईया देशी हल से करके मिट्टी को भुरभूरी बना लेनी चाहिये। इसके बाद पाटा लगाकर खेतों को सममतल कर लेना चाहियें।

उन्नत किस्में

हरे चारे के लिए बाजरे की द्वितीय पीढ़ी की एच बी–3 एवं एच बी–5 उपयुक्त है जिनसे 500–550 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरा चारा पैदा हो सकता है । बहु कटाई चारे हेतु एस–530 किस्म उपयुक्त है जिससे 550–600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हरा चारा प्राप्त हो सकता है।

बुवाई का समय

खरीफ में वर्षा प्रारंभ होने के पश्चात बाजरे की बुवाई की जाती है. ग्रीष्मकाल में चारे हेतु फरवरी के दितीय सप्ताह से अप्रैल के प्रथम पक्ष तक की जा सकती है।

बीज दर

बाजरे की कतार बोनी हेतु 10–12 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। छिटका पद्धति से बुवाई करने के लिए 15–20 कि. ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है. अंतरवर्ती खेती में बाजरा तथा लोबिया 2:1 अनुपात (2 लाइन बाजरा तथा एक लाइन लोबिया) में बोना चाहिए इसके लिए 6–7 कि.ग्रा. बाजरा तथा 12–15 कि.ग्रा. लोबिया बीज की आवश्यकता होती है।

बुवाई की विधि

प्रायः इसकी बुवाई छिटकवां पद्धति से की जाती है परन्तु बेहतर उत्पादन के लिए इसकी बुवाई कतारों में 25–30 सेमी की दूरी पर करना श्रेयस्कर रहता है।

खाद एवं उर्वरक

भरपूर चारा पैदावार के लिए खाद एवं उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग करना आवश्यक होता है. पोषक तत्वों की सही मात्रा का निर्धारण मृदा परिक्षण के आधार पर हो सकता है. खेत की अंतिम जुताई के समय 8–10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद खेत में मिला देना चाहिए. पौधों की उचित बढ़वार के लिए 80 कि.ग्रा. नत्रजन, 40 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 25 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा शेष मात्रा को दो भागों में बांटकर बुवाई के 30–35 दिन बाद एवं प्रथम कटाई के तुरंत बाद देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण–

बाजरा बोने के तुरन्त बाद अंकुरण से पहले एट्राजीन 1 कि.ग्रा.प्रति हेक्टेयर 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रित रहते है । खड़ी फसल में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु 2,4–डी 1 किग्रा.प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के 35 दिन बाद छिडकाव करना चाहिए।

सिंचाई

ग्रीष्मकाल में फसल को 10–12 दिन के अन्तराल पर पानी देना चाहिए। फसल को कुल 3–4 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

चारा कटाई

चारे के लिए बाजरे की फसल बुवाई के लगभग 50–60 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाती है। फसल में 50: बाली आने के बाद प्रोटीन की मात्रा में गिरावट होने लगती है और रेशे की मात्रा बढ़ने लगती है। अतः उत्तम हरे चारे के लिए फसल में 50 : बाली निकलने की अवस्था पर काट लेना चाहिए। दूसरी कटाई प्रथम कटाई के 40–45 दिन बाद की जा सकती है।

चारा उपज

बाजरे की उन्नत किस्मों के बेहतर सस्य प्रबंधन से औसतन 400–500 कुन्तल तथा बहु कटाई वाली किस्मों से 600–650 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।